कल्प-वृक्ष

इस कल्प वृक्ष द्वारा, मनुष्य-सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त के विराट रुप के साक्षात्कार से मनुष्य 'नष्टोमोहः स्मृतिलब्धः' और 'मन्मनाभव' होकर विकर्माजीत चक्रवर्ती दैवी स्वराज्य पद पाता है

कल्प वृक्ष का बीज

गीता के निराकार भगवान 'ज्योतिर्लिंगम् शिव' ब्रह्मा जी के मुख कमल द्वारा कहते हैं :-

हे वत्सों! यह विराट मनुष्य-सृष्टि एक उल्टे वृक्ष के समान है। मैं इसका अविनाशी बीजरूप हूँ और इस सृष्टि के सूर्य और तारों के प्रकाश के भी पार ब्रह्मलोक में निवास करता हूँ। मैं अव्यक्तमूर्त परमात्मा इस व्यक्त सृष्टि में सर्वव्यापक नहीं हूँ; बल्कि जैसे एक साधारण बीज में सारे वृक्ष के आदि, मध्य तथा अन्त के विकास के संस्कार होते हैं वैसे ही मुझ में भी इस सृष्टि का त्रिकालिक ज्ञान है। अत: केवल मैं ही सर्वज्ञ और त्रिकालदर्शी हूँ। इस कारण मैं ही इस रचना का सत्य ज्ञान पुराने वृक्ष के अन्त और नए वृक्ष के पुन: स्थापना के समय देता हूँ।

हे वत्सों! प्रत्येक साधारण वृक्ष का बीज एक ही होता है। इसी प्रकार मैं बीजरूप परमात्मा भी एक ही हूँ। अन्य सभी मनुष्य मुझ भगवान का रूप नहीं; बल्कि मुझ अनादि और अपरिवर्तनीय बीजरूप की सत्य रचना है। इस रचना रूपी वृक्ष को मिथ्या मानना मानो मुझ बीजरूपी परमात्मा को मिथ्या मानना है।

कल्प वृक्ष की आदि

हे वत्सों! कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम समय में आदि देव ब्रह्मा के मुख कमल द्वारा गीता ज्ञान और योग की शिक्षा से सतयुगी और त्रेतायुगी सत्वगुणी दैवी सृष्टि की स्थापना करता हूँ। उन दोनों युगों की सृष्टि को **'ब्रह्मा का दिन'** कहा जाता है। उस सृष्टि में विकार, दु:ख तथा अशांति नाम मात्र भी नहीं होती। अत: उसे 'स्वर्ग' कहते हैं।

कल्प वृक्ष का मध्य

द्वापर युग से विकारों, अशांति तथा दु:खों का आरम्भ होता है। उस समय से इस्लाम मत, बुद्ध मत, ईसाई मत आदि एक-दूसरे के पश्चात् स्थापित होने लगते हैं और भक्ति, शास्त्र, यज्ञ, तप, वैराग्य, अनेक प्रकार के योग, कर्मकाण्ड इत्यादि शुरू होते हैं; परन्तु मैं वेदों, शास्त्रों अथवा इन मार्गों से नहीं मिलता हूँ। भक्तों, साधकों की मनोकामना भी मैं ही अल्प काल के लिए पूर्ण कराता हूँ और उनके इष्ट का साक्षात्कार भी करा देता हूँ। दुर्गति के इन दो युगों को **'ब्रह्मा की रात्रि'** और इस काल की सृष्टि को 'नरक' कहते हैं।

त्रिमूर्ति, सृष्टि-चक्र और कल्प वृक्ष की व्याख्या से स्पष्ट है कि विकारों के कारण दुर्गति को प्राप्त हुए सभी पापी लोगों, भक्तों, साधुओं इत्यादि का ज्ञान तथा स्वराज्य योग बल द्वारा, उद्धार करने वाला मैं, गीता का निराकार भगवान, सृष्टि का बीजरूप, त्रिमूर्ति परमात्मा शिव ही हूँ जो कि संगम समय <u>ब्रह्मा द्वारा जीवनमुक्ति</u> और <u>शंकर द्वारा मुक्ति</u> देता हूँ।

कल्प वृक्ष का अन्त

कलियुग के अन्त तक जब सभी मनुष्यात्माएँ पतित हो जाती हैं और यह मनुष्य-सृष्टि- रूपी वृक्ष पूर्ण वृद्धि को प्राप्त हो जर्जरीभूत हो जाता है, तब मैं सतयुगी दैवी सृष्टि का कलम लगाने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के भाग्यशाली रथ अर्थात् तन में अपने परमधाम से आकर अवतरित होता हूँ और भारत की माताओं, कन्याओं, गोपियों अथवा शक्तियों (जिन्हें कि **'प्रजापिता ब्रह्मा कुमारियाँ'** भी कहा जाता है) को ज्ञानामृत का कलश देता हूँ। तब ही मैं निज अव्यक्त रूप का, तीनों देवताओं के वास्तविक रूपों का, वैकुण्ठ का, महाविनाश का साक्षात्कार भी करा देता हूँ।

वैजयन्ती माला व गंगाएँ

इन्हीं ज्ञान गंगाओं अथवा योगबल वाली शक्तियों की अलौकिक सेवा के कारण भारत में कन्याओं अथवा शक्तियों की महिमा है। वैजयन्ती माला के 108 मणके इन्हीं कन्याओं, माताओं तथा गोपों-पाण्डवों के, युगल मणका लक्ष्मी-नारायण का तथा फूल मुझ निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक है।

पुनरावृत्ति:- फिर द्वापरयुग में जबकि आदि सनातन दैवी धर्म वाले लोग विकारी हो जाते हैं तथा इस्लाम, बुद्ध, क्रिश्चियन मत आदि स्थापन होकर, कलियुग के अन्त तक वृद्धि को प्राप्त होते हैं, तब मैं पुन: स्वयं अनेक अधर्म विनाश और एक आदि सनातन देवी-देवता सत्धर्म की पुनर्स्थापना का ईश्वरीय कर्तव्य करता और कराता हूँ। इस प्रकार अनादि काल से पाँच हज़ार वर्षों का यह सृष्टि-चक्र कल्प-2 पुनरावृत होता है।

अत: मुझे इस मनुष्य लोक में सर्वव्यापी समझना महान भूल है। यदि मैं मनुष्य लोक में सर्वव्यापी होता तो न कभी धर्म की ग्लानि होती, न युग परिवर्तन होता, न ही कोई मनुष्य विकारी, दु:खी, अशान्त होता।

परमात्मा का पुन: अवतरण

वत्सों ! स्पष्ट है कि अब सभी आत्माएँ तथा सभी धर्म-वंश अपनी-2 स्वर्ण, रजत, ताम्र तथा लोह अवस्थाओं को पार कर चुकी हैं और अब सभी अपनी तमोप्रधान तथा आसुरी संस्कारों वाली अवस्था में हैं। जिस ज्ञान और योग द्वारा मैंने पहले भारत में श्री लक्ष्मी-श्री नारायण तथा श्री सीता-श्री राम का दैवी स्वराज्य स्थापन किया था वह अब प्राय: लोप हो गया है, जिसके परिणामस्वरूप अब भारत कंगाल मुहताज हो गया है। अत: सतयुग दैवी सृष्टि की स्थापना अर्थ मैं पुन: अवतरित हुआ हूँ।

भगवान शिव कहते हैं :-

मनुष्यात्माओं ने तो संसार में मिथ्या ज्ञान फैलाया है कि आत्मा ही शिव है, परमात्मा सर्वव्यापी है , आत्मा निर्लेप है, मनुष्यात्मा 84 लाख योनियाँ धारण करती है, कल्प की आयु करोड़ों वर्ष है, गीता का ज्ञान श्री कृष्ण ने द्वापरयुग में दिया, श्री कृष्ण को 108 पटरानियाँ थीं, श्री राम की सीता चुराई गई इत्यादि, इत्यादि। इस मिथ्या ज्ञान से तो उन्होंने मनुष्यों को मुझ से विमुख कर मुक्ति और जीवनमुक्ति से वंचित किया है।

(तत्कालीन) मुख्य केन्द्र
ब्रह्माकुमारी
ईश्वरीय विश्वविद्यालय
पाण्डव भवन
माउण्ट आबू (राजस्थान)
भारत वर्ष

(वर्तमान कालीन) अन्य आध्यात्मिक परिवार
आध्यात्मिक विश्व विद्यालय
1. दिल्ली : ए-1, 351-352, विजय विहार, दिल्ली-110 085
2. फर्रुखाबाद : 5/26ए, सिकत्तरबाग, जि. फर्रु. (उ.प्र.) 209625
3. कम्पिला : नेहरु नगर, गंगा रोड, जि. फर्रुखाबाद (यू.पी.) 207505
और जम्मू, चण्डीगढ़, कोलकता, मुम्बई, हैदराबाद, बैंगलूर